ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 41 • अंक 162-163-164 • अप्रेल-दिसम्बर 2014

A Peer Reviewed Research Quarterly

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृ. संख्या
गीता दर्शन में त्याग की अवधारणा	डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	91-97
उत्तराध्ययन सूत्र में मानवीय मूल्य : एक विमर्श	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	98-105
उपनिषदों में अहिंसा के स्वर	डॉ. समणी सत्यप्रज्ञा	106-111
गांधी का मानवीय अर्थशास्त्र	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	112-118
अद्वैत एवं बौद्ध दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. योगेश कुमार जैन	119-128
संस्कृतकाव्यशास्त्र एवं प्राकृतकाव्यसाहित्य	डा. सुमन कुमार झा	129-138
आचार्य तुलसी का स्वस्थ समाज संरचना में योगदान	डॉ. सुनीता इन्दोरिया	139-144

उत्तराध्ययन सूत्र में मानवीय मूल्य : एक विमर्श

—डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा

मूल्यों का मानवीय जीवन में अत्यन्त महत्व है। मूल्य एक न होकर अनेक होते हैं, जैसे नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, मानसिक मूल्य, वैयक्तिक मूल्य आदि। किन्तु ये सभी प्रकार के मूल्य निजी पहचान बनाए रखते हुए भी, एक-दूसरे से परिपूरित होते रहते हैं। मूल्य सामाजिक संबंधों को संतुलित करने तथा सामाजिक व्यवहारों में एकरूपता उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होते हैं। मूल्य समाज के सदस्यों की आंतरिक भावनाओं पर आधारित होते हैं। इस कारण ये मूल्य सामाजिक जीवन को वह मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करते हैं जो कि समाज व्यवस्था व संगठन के लिए आवश्यक होता है। कुछ मूल्य शाश्वत हैं कुछ युग और काल सापेक्ष हैं तथा अपने आप में परिवर्तन शील हैं। नैतिक मूल्य तीन प्रकार के हैं-व्यक्तिनिष्ठ, समाजनिष्ठ तथा राष्ट्रनिष्ठ। व्यक्ति निष्ठ नैतिक मूल्य मानवता के उदात्त गुणों के प्रतीक हैं। तप, अहिंसा, सदाचार, क्षमा, धृति, करूणा, प्रामाणिकता, आत्मानुशासन, जितेन्द्रियता आदि युग और काल निरपेक्ष शाश्वत नैतिक मूल्य हैं, जिनके अनुपालन से उत्तम व्यक्ति, स्वस्थ समाज एवं अच्छे राष्ट्र का निर्माण संभव है। राष्ट्रनिष्ठ नैतिक मूल्य समस्त देश, काल के शासकवर्ग पर लागू होते हैं। ये मूल्य वर्जनाओं एवं प्रायश्चित्तों का विधान मानव सुधार के अवसर प्रदान करने के लिए हैं।

जीवन-मूल्यों के व्यक्ति, समाज, देश, भौतिकता, अध्यात्म, प्रकृति, कला, सौन्दर्य आदि की दृष्टि से अनेक रूप सम्भव है वस्तुतः विशेष वर्गों में विभाजित करना कठिन है, क्योंकि इन पर देश, काल, भाव आदि का निरन्तर प्रभाव पड़ता है। तथापि, समय-समय पर आचार-संहिताएं, चर्या-साहित्य, श्रावकाचार, श्रमणाचार, दण्डनीति, कामशास्त्र आदि विषयों पर जो ग्रंथ लिखे गये, वे प्रकारान्तर से जीवन-मूल्यों के प्रतिपादन में ही लिखे गये माने जा सकते हैं।